HINDI - 159

नमाज़ की शिक्षा

लेख
डा॰ अब्दुल्लाह बिन अहमद अज़्ज़ैद
अनुवाद
मुहम्मद ताहिर हनीफ़

Co-operative office for Call & foreigners Guidance at Sultanah

The Co-operative Office for Call & foreigners Guidance at Sultanah
Under the supervision of Ministry of Islamic Affairs and Endowment and Call and Guidance
Tel. 4240077 Fax 4251005 P.O. Box 92675 Riyadh 11663 E-mail: Sultanah22@hotmail.com

नमाज़ की शिक्षा

लेख

डा॰ अब्दुल्लाह बिन अहमद अज़्ज़ैद

अनुवाद

मुहम्मद ताहिर हनीफ़

मंत्रिमंडल सचिवालय, प्रकाशन एवं
वितरण विभाग द्वारा निरिक्षित

© وزارة الشؤون الإسلامية والأوقاف والدعوة والإرشاد، ١٤٢٢هـ

فهرسة مكتبة الملك فهد الوطنية أثناء النشر

الزيد، عبدالله بن أحمد

تعليم الصلاة.- الرياض.

٥٦ ص، ١٢ × ١٧ سم

ردمك: ١ - ٣٩٧ - ٢٩ - ٩٩٦٠

(النص باللغة الهندية)

١- العقيدة الإسلامية ٢- التوحيد أ- العنوان

ديوي ٢٤٠ ٢٢/٣٨٣٧

رقم الإيداع: ٢٢/٣٨٣٧

ردمك: ١-٣٩٧-٢٩-٩٩٦٠

الطبعة الأولى

١٤٢٢هـ

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूं जो अति मेहरबान और दया करने वाला है।

प्रस्तावना

الْحَمْدُ للهِ وَحْدَهُ، وَالصَّلاَةُ وَالسَّلاَمُ عَلَى رَسُولِ اللهِ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ اللهِ -صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ- أَمَّا بَعْدُ:

सभी प्रशंसायें अल्लाह तआला के लिए हैं, जो अकेला है, और दरूद व सलाम अल्लाह के रसूल मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह पर हो।

इस्लाम के दूसरे मूल आधार नमाज़ के विषय में एक ऐसे संक्षिप्त और महत्वपूर्ण पुस्तिका के सम्बन्ध में मुझसे बार-बार प्रश्न किया गया जो महत्वपूर्ण मसायल पर आधारित हो, इसके साथ ही अनेक भाषाओं में अनुवाद करने के योग्य हो।

अत: मैंने नमाज़ के विषय में लिखी गई अधिकतर किताबों को एकत्र करके अध्ययन किया तो ज्ञात हुआ कि प्रत्येक किताब जो इस विषय में लिखी गई हैं, विषय के एक भाग

पर प्रकाश डालती हैं, जैसे किसी पुस्तक में नमाज़ का तरीक़ा और उसकी विधि का वर्णन है परन्तु उन में उसके महत्व एवं विशेषता का कोई वर्णन नहीं, किसी में बहुत सारे मतभेद पूर्ण मसायल और अहकाम पर अनुसन्धान करके किताब को अति विस्तार कर दिया गया है, साधारण जन समूह को जिनकी कोई आवश्यकता नहीं ।

इसलिए मैंने नमाज़ के महत्वपूर्ण नियमों को जिनका पूरा करना प्रत्येक मुसलमान के लिए आवश्यक है। क़ुरआन व हदीस पर आधारित तर्कानुसार इस पुस्तिका में जमा किया है और विस्तारपूर्ण एवं मतभेद पूर्ण अहकाम को छोड़ दिया है।

इसके साथ ही मैंने इस बात का पूर्ण प्रयास किया है कि नमाज़ के सम्पूर्ण मसायल को संक्षिप्त रूप से प्रस्तुत कर दूँ ताकि साधारण नमाज़ी के लिए सुविधा और लाभदायक हो और अनेक भाषाओं में उसका अनुवाद भी सरल हो।

मैं अल्लाह (तआला) से दुआ करता हूँ कि इस पुस्तिका को लाभदायक बनाये, अवश्य वही सुनने वाला स्वीकार करने वाला है, और अल्लाह ही तौफ़ीक़ देने वाला है।

डा॰ अब्दुल्लाह बिन अहमद अज्जैद

रियाध : १-१-१४१४ हिजरी

परिभाषा

सहीह हदीस द्वारा सिद्ध है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

इस्लाम की आधारशिला पांच चीज़ों पर रखी गई है :

१- इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सच्चा पूज्य नहीं और मुहम्मद अल्लाह के (अंतिम) रसूल (संदेष्टा) हैं।

२- नमाज़ स्थापित करना।

३- ज़कात (अनिवार्य दान) देना।

४- रमज़ान के रोज़े (व्रत) रखना।

५- अल्लाह के घर (काअबा) का हज्ज करना, उन लोगों के लिए जो उसका सामर्थ्य और शक्ति रखते हैं।

उपरोक्त हदीस इस्लाम के पांचों स्तम्भ के बयान को सम्मिलित है।

<u>प्रथम स्तम्भ :</u>

ला इलाहा इल्लल्लाह एवं मुहम्मर्दु-रसूलुल्लाह की गवाही देना:

ला इलाहा इल्लल्लाह की गवाही का अर्थ यह है कि अकेले

अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, इसलिए शब्द "ला इलाहा" अल्लाह के अतिरिक्त जिन चीज़ों की भी पूजा की जाती है उन सभी को नकारता है और शब्द "इल्लल्लाह" इबादत (उपासना) को केवल एक अल्लाह के लिए जिसका कोई साझी नहीं, सिद्ध करता है।

अल्लाह (तआला) फ़रमाते हैं :

﴿شَهِدَ اللَّهُ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ وَالْمَلَائِكَةُ وَأُولُوا الْعِلْمِ قَائِمًا بِالْقِسْطِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ﴾

"अल्लाह उसके फ़रिश्तों तथा ज्ञानियों ने न्याय पर स्थिर रहकर गवाही दी है कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं, वही सर्वशक्तिमान निर्णय करता है।" (आले इमरान : १८)

और ला इलाहा इल्लल्लाह की गवाही तीन बातों के इक़रार का तक़ाज़ा करती है।

१- तौहीद उलूहियत: (ईश्वर का अकेले ही उपासना के योग्य होना)

इसका अर्थ है कि अल्लाह पाक अकेला ही सम्पूर्ण इबादत के योग्य है, और इबादत का कोई अंश उसके अतिरिक्त के

लिए वैध नहीं, एकेश्वरवाद का यही वह भाग है जिसके लिए अल्लाह ने सभी जीवन प्राणियों को पैदा किया है, अल्लाह (तआला) ने फ़रमाया :

﴿وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالإِنسَ إِلاَّ لِيَعْبُدُونِ﴾

"और मैंने जिन्नात एवं मनुष्यों को मात्र इसलिए पैदा किया है कि वे केवल मेरी इबादत (उपासना) करें" (अज़्ज़ारियात : ५६)

यही वह तौहीद है जिसकी ओर आमन्त्रण देने के लिए अल्लाह ने समस्त रसूलों को भेजा और सभी धर्म ग्रन्थ उतारे, अल्लाह (तआला) ने फ़रमाया :

﴿وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَسُولاً أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ﴾

"तथा हमने प्रत्येक समुदाय में रसूल भेजा कि (लोगो!) केवल अल्लाह की उपासना करो तथा राक्षसों (अल्लाह के सिवा सभी मिथ्या पूज्य) से बचो।" (अन्नहल : ३६)

तौहीद (एकेश्वरवाद) के विपरीत शिर्क (बहुदेववाद) है, इसलिए यदि तौहीद का अर्थ प्रत्येक प्रकार की इबादत को अल्लाह के लिए विशेष करना है, तो शिर्क का अर्थ हुआ कि

इबादत का कोई भाग अल्लाह के अतिरिक्त के लिए किया जाये, और जो व्यक्ति इबादत के विभिन्न प्रकारों जैसे नमाज़, रोज़ा, दुआ, मनौती, बलि एवं किसी क़ब्र वाले से गोहार माँगना आदि में से किसी प्रकार को अल्लाह के अतिरिक्त के लिए करे, उसको पसन्द करते हुए और अपनी इच्छा के अनुसार, तो उसने अल्लाह के साथ शिर्क किया और शिर्क ही वह महापाप है जो सम्पूर्ण अच्छे कर्मों को बरबाद एवं नष्ट कर देता है।

तौहीद रुबुबियत : (अखिल जगत का अकेला प्रभु होना)

इस तौहीद (एकेश्वरवाद) का अर्थ इस बात का इक़रार करना है कि अल्लाह (तआला) ही पैदा करने वाला, जीविका देने वाला, जीवन और मृत्यु देने वाला, ऐसा प्रबन्धक जिसके लिए धरती और आकाश का राजपाट है।

तौहीद के इस भाग का इक़रार सम्पूर्ण सृष्टि के अंदर उस प्राकृतिक रूप से पाया जाता है, जिस पर अल्लाह ने उसे पैदा किया है, यहाँ तक कि वे मुश्रिकीन (बहुदेववादी) जिनके बीच हमारे रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भेजे गये, वे भी इस तौहीद का इक़रार करते थे और इसका इंकार नहीं करते थे, जैसाकि अल्लाह (तआला) ने फ़रमाया :

﴿قُلْ مَنْ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالأَرْضِ أَمَّنْ يَمْلِكُ السَّمْعَ وَالأَبْصَارَ وَمَنْ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُدَبِّرُ الأَمْرَ فَسَيَقُولُونَ اللَّهُ فَقُلْ أَفَلاَ تَتَّقُونَ﴾

"(आप) कहिए कि वह कौन है जो तुमको आकाश तथा धरती से जीविका पहुँचाता है, अथवा वह कौन है जो कानों तथा आँखों पर पूर्ण अधिकार रखता है तथा वह कौन है जो जीवधारी को निर्जीव से निकालता है तथा निर्जीव से सजीव को निकालता है तथा वह कौन है जो सभी कार्यों का संचालन करता है ? अवश्य वह यही कहेंगे कि अल्लाह । तो कहिए कि फिर डरते क्यों नहीं ।" (यूनुस : ३१)

तौहीद के इस भाग का इंकार मानव जाति में से केवल थोड़े व्यक्तियों ने किया, उन व्यक्तियों ने भी केवल प्रत्यक्ष रूप से घमंड और स्वयं को बड़ा सिद्ध करने के लिए किया वरना अपने हृदय और आत्मा के भीतर पूर्ण रूप से इस का इक़रार किया, जैसाकि अल्लाह (तआला) ने फ़रमाया :

﴿وَجَحَدُوا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَا أَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا وَعُلُوًّا﴾

"तथा उन्होंने अस्वीकार कर दिया यद्यपि उनके दिल विश्वास कर चुके थे केवल अत्याचार एवं घमण्ड के कारण ।" (अन-नमल : १४)

३- तौहीद अस्मा व सिफ़ात : (अल्लाह के पवित्र नामों एवं गुणों में एकेश्वरवाद)

तौहीद के इस भाग का अर्थ है कि अल्लाह ने जो कुछ अपने विषय में अथवा उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसके विषय में वर्णन किया है उन पर ईमान रखा जाये और उन नामों एवं विशेषताओं को उसी रूप में रखा जाये जो उसकी महिमा के योग्य है, उनकी उपमा, उदाहरण और स्थिति न बयान किया जाये, न उनके अर्थ को बदला जाये और न रद्द किया जाये, जैसा कि अल्लाह (तआला) ने फ़रमाया :

﴿وَلِلَّهِ الأَسْمَاءُ الْحُسْنَى فَادْعُوهُ بِهَا﴾

"तथा शुभ नाम अल्लाह के लिए ही हैं, इसलिए इन नामों से उसी को पुकारो ।" (अल-आराफ़ : १८०)

और फ़रमाया :

﴿لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ﴾

"उस जैसा कोई नहीं, और वह सुनने वाला देखने वाला है।" (अश्-शूरा : ११)

अत: ला इलाहा इल्लल्लाह उन्हीं तीन चीज़ों की घोषणा और इक़रार का नाम है और जो व्यक्ति इसके अर्थ को जानते हुए और उनकी आवश्यकताओं को पूरा करते हुए अल्लाह तआला से शिर्क को नकारे और उसके एकेश्वरवाद को सिद्ध करे वही सच्चा मुसलमान है, और जो व्यक्ति इस (कलिमा) को मुख से कहे, और प्रत्यक्ष रूप से इसकी आवश्यकताओं के अनुसार कर्म भी करे, परन्तु हृदय में इस पर विश्वास न रखे वह मुनाफ़िक़ (द्वयवादी-अवसरवादी) है, और जो मुख से इस (कलिमा) को प्रकट करे और अनेक बार करे परन्तु उसका कर्म इसके विपरीत हो तो वह काफ़िर (नास्तिक) है।

मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह की गवाही :

कलिमा के इस भाग की गवाही का अर्थ यह है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिस संदेश को अल्लाह के पास से लाये हैं उस पर विश्वास रखा जाये, उसको सत्य समझा जाये, उनके आदेश का पालन किया जाये और अवज्ञा से बचा जाये, और यह कि प्रत्येक व्यक्ति की उपासना और आराधना उस शास्त्र के अनुसार हो जिसको अल्लाह के

रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने प्रचलित किया है।
जैसाकि अल्लाह (तआला) ने फ़रमाया :

﴿لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِنْ أَنفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِينَ رَءُوفٌ رَحِيمٌ﴾

"तुम्हारे पास एक ऐसे रसूल आये हैं जो तुम्हारी जाति से हैं जिनको तुम्हारी हानि की बातें अत्यन्त भारी लगती हैं, जो तुम्हारे लाभ के बहुत इच्छुक हैं, ईमान वालों के लिए बड़े करूणामय और कोमल हृदय हैं।" (अत्तौबः- १२८)

दूसरे स्थान पर फ़रमाया :

﴿مَنْ يُطِعِ الرَّسُولَ فَقَدْ أَطَاعَ اللَّهَ﴾

"जिसने (इस) रसूल का अनुसरण किया उसी ने अल्लाह की आज्ञाकारिता की।" (अन-निसा : ८०)

और फ़रमाया :

﴿وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ﴾

"और अल्लाह एवं उसके रसूल के आदेशों का पालन करो, ताकि तुम पर कृपा की जाये।" (आले इमरान : १३२)

एक स्थान पर फ़रमाया :

﴿مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللّٰهِ وَالَّذِينَ مَعَهُ أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ﴾

"मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं तथा जो लोग उनके साथ हैं काफ़िरों पर कठोर हैं, आपस में दयालु हैं।" (अल-फ़त्ह : २९)

दूसरा और तीसरा स्तम्भ :

नमाज़ स्थापित करना और ज़कात (अनिवार्य दान) देना :

अल्लाह (तआला) ने बयान फ़रमाया :

﴿وَمَا أُمِرُوا إِلاَّ لِيَعْبُدُوا اللّٰهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ حُنَفَاءَ وَيُقِيمُوا الصَّلاَةَ وَيُؤْتُوا الزَّكَاةَ وَذَلِكَ دِينُ الْقَيِّمَةِ﴾

"उन्हें इसके अतिरिक्त कोई आदेश नहीं दिया गया कि केवल अल्लाह की इबादत करें, उसी के लिए धर्म को शुद्ध कर रखें एकाग्र होकर, और नमाज़ को स्थापित करें तथा ज़कात दें, यही धर्म सत्य है।" (अल-बय्यिन:-५)

और फ़रमाया :

﴿وَأَقِيمُوا الصَّلاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَارْكَعُوا مَعَ الرَّاكِعِينَ﴾

"और नमाज़ स्थापित करो, एवं ज़कात दो, और रुकूअ करने वालों के साथ रुकूअ करो (झुक जाओ)।" (अल-बक़र:-४३)

नमाज़ का वर्णन हम शीघ्र ही करने वाले हैं, परन्तु ज़कात वह धन है जो धनी व्यक्तियों से लेकर निर्धनों और उनको दिया जाता है जिनको ज़कात लेने का अधिकार है।

ज़कात इस्लाम के स्तम्भों में से महान स्तम्भ है जिसके द्वारा समाज में एकता एवं समानता पैदा होती है और समाज के सदस्य एक-दूसरे के लिए सहायक और सहयोगी होते हैं, इस प्रकार कि धनवान के धन में निर्धनों का भी अधिकार होता है और इस अधिकार में धनवान का कोई उपकार नहीं होता।

चौथा स्तम्भ :

रमज़ान के महीने का रोज़ा : (व्रत रखना)

अल्लाह तआला ने बयान फ़रमाया :

﴿يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ﴾

"हे ईमान वालो ! तुम पर रोज़े (व्रत जो रमज़ान के महीने में रखे जाते हैं) अनिवार्य किये गये जिस प्रकार तुमसे पहले लोगों पर अनिवार्य किये गये थे, ताकि तुम तक़्वा (अल्लाह से भय) का मार्ग अपनाओ ।" (अल-बक़र:-१८३)

पाँचवाँ स्तम्भ :

सामर्थ्य रखने वालों के लिए अल्लाह के घर का हज्ज करना: अल्लाह तआला फ़रमाते हैं :

﴿وَلِلَّهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ إِلَيْهِ سَبِيلاً وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعَالَمِينَ﴾

"अल्लाह (तआला) ने उन लोगों पर जो (अल्लाह के) घर की ओर मार्ग पा सकते हों, उसका हज्ज करना अनिवार्य कर दिया है, और जो कोई कुफ़्र करे तो अल्लाह (तआला) पूरे विश्व से निस्पृह है ।" (आले इमरान : ९७)

इस्लाम में नमाज़ का महत्व

उपरोक्त बयान से इस्लाम में नमाज़ का महत्व और उसकी प्रधानता का ज्ञान होता है और यह कि वह इस्लाम का दूसरा स्तम्भ है जिसको स्थापित किये बिना इन्सान का इस्लाम ही सही नहीं हो सकता, उसको अदा करने में आलस्य करना या गफ़लत करना मुनाफ़िकों (द्वयवादियों) की निशानियों में से है, और इसको छोड़ देना कुफ़्र, पथभ्रष्टता और इस्लाम की सीमा से बाहर हो जाना है, इसलिए कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है:

((بَيْنَ الرَّجُلِ وَبَيْنَ الكُفْرِ وَالشِّرْكِ تَرْكُ الصَّلاَةِ))

"इंसान और कुफ़्र तथा शिर्क के बीच अंतर केवल नमाज़ का छोड़ देना है।"

एक दूसरी हदीस में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

((الْعَهْدُ الَّذِي بَيْنَنَا وَبَيْنَهُم الصَّلاَةُ ، فَمَنْ تَرَكَهَا فَقَدْ كَفَرَ))

"हमारे और उन (काफ़िरों) के बीच अंतर केवल

नमाज़ का है, इसलिए जिस व्यक्ति ने उसे छोड़ दिया उसने कुफ़्र किया।" (इस हदीस को इमाम तिर्मिज़ी ने रिवायत किया और कहा कि यह हदीस हसन है)

नमाज़ इस्लाम की चोटी और उसका मूल आधार है, यह अल्लाह और उसके भक्तों के बीच सम्बन्ध जोड़ने का माध्यम है, जैसाकि एक सहीह हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बयान फ़रमाया :

((إنَّ أَحَدَكُمْ إذَا صَلَّى يُنَاجِي رَبَّه))

"जब तुम में से कोई नमाज़ पढ़ता है तो अपने प्रभु से मुनाजात (कान में बात कहना अथवा अकेले में बातें) करता है।"

नमाज़ बन्दे और प्रभु के बीच प्रेम का चिन्ह और उसकी अनुकम्पाओं पर उसको सम्मान देना है, अल्लाह (तआला) के निकट नमाज़ की महानता और महत्व की एक बड़ी दलील यह है कि यह प्रथम अनिवार्य उपासनाओं में से है जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अनिवार्य किया गया, और इसे मेराज की रात्रि में इस उम्मत (समुदाय) पर फ़र्ज़ किया गया, और जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्रश्न किया गया कि कौन सा कर्म सर्वश्रेष्ठ है तो आप ने फ़रमाया :

((الصَّلَاةُ عَلَى وَقْتِهَا))

"नमाज़ को उसके समय पर अदा करना ।" (बुख़ारी एवं मुस्लिम)

नमाज़ को अल्लाह (तआला) ने पापों से पवित्र होने का एक साधन बनाया है जैसाकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

((أَرَأَيتُم لَو أَنَّ نَهْراً بِبَابِ أَحَدِكُمْ يَغْتَسِلُ مِنْهُ كُلَّ يَومٍ خَمْسَ مَرَّاتٍ ، هَلْ يَبْقَى مِنْ دَرَنِه شَيءٌ ؟ قَالُوا : لاَ يَبْقَى مِنْ دَرَنِهِ شَيءٌ قَالَ : فَذَلِكَ مِثْلُ الصَّلَوَاتِ الْخَمْسِ ، يَمْحُو اللهُ بِهِنَّ الخَطَايا))

"कि यदि तुममें से किसी के द्वार पर एक नदी हो जिस में वह प्रत्येक दिन पाँच बार स्नान करता हो तो क्या उसके शरीर पर कुछ मैल कुचैल बाक़ी रहेगा, उन्हों (सहाबा किराम) ने फ़रमाया कि मैल कुचैल में से कुछ भी बाक़ी न रहेगा, आप (अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि इसी प्रकार पाँचों नमाज़ है, इसके द्वारा अल्लाह (तआला अपने बन्दों के) पापों को मिटा देता है।" (बुख़ारी एवं मुस्लिम)

एक अन्य हदीस में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने संसार से विदा होते समय अंतिम वसीयत की और अपनी उम्मत (समुदाय) से जो वायदा लिया वह यही था :

"कि वे नमाज़ और दासों के सम्बन्ध में अल्लाह से डरें।" (अहमद, नसाई और इब्ने माजा)

अल्लाह (तआला) ने क़ुरआन करीम में नमाज़ का बहुत अधिक महत्व बयान किया है, और नमाज़ियों की बड़ी प्रशंसा की है, अनगणित स्थानों पर विशेष रूप से नमाज़ का वर्णन किया है और उसको स्थापित करने एवं समय पर पढ़ने के लिए बल दिया है, एक स्थान पर फ़रमाया :

﴿حَافِظُوا عَلَى الصَّلَوَاتِ وَالصَّلَاةِ الْوُسْطَى وَقُومُوا لِلَّهِ قَانِتِينَ﴾

"नमाज़ों की सुरक्षा करो विशेषकर मध्य वाली नमाज़ की, और अल्लाह के लिए नम्रता पूर्वक खड़े रहा करो।" (अल-बक़र:-२३८)

और फ़रमाया :

﴿وَأَقِمِ الصَّلَاةَ إِنَّ الصَّلَاةَ تَنْهَى عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ﴾

"तथा नमाज़ स्थापित कीजिए, नि:सन्देह नमाज़ निर्लज्जा तथा दुराचार से रोकती है।" (अल-अनकबूत: ४५)

एक स्थान पर फ़रमाया :

﴿يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلاةِ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ﴾

"हे ईमान वालो ! धैर्य तथा नमाज़ के द्वारा सहायता चाहो, अल्लाह (तआला) धैर्य रखने वालों का साथ देता है।" (अल-बक़र:-१५३)

और फ़रमाया :

﴿إِنَّ الصَّلاةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ كِتَابًا مَوْقُوتًا﴾

"अवश्य नमाज़ मोमिनों पर निश्चित तथा निर्धारित समय पर अनिवार्य की गई है। (अन-निसा : १०३)

दूसरी ओर अल्लाह (तआला) ने नमाज़ छोड़ने और उसके स्थापित करने में आलस्य एवं सुस्ती करने वालों के लिए अज़ाब (प्रकोप) को अनिवार्य कर दिया है, फ़रमाया :

﴿فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ أَضَاعُوا الصَّلاةَ

﴿وَاتَّبَعُوا الشَّهَوَاتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا﴾

"फिर उनके पश्चात ऐसे कपूत पैदा हुए कि उन्होंने नमाज़ बर्बाद कर दी तथा मानोकांक्षा के पीछे पड़ गये, अतः वे विनाश (अथवा नर्क की घाटी) को पायेंगे।" (मरियम : ५९)

अल्लाह (तआला) ने अपनी महान किताब में बयान फ़रमाया है कि पापियों के नरक में जाने का प्रथम कारण उनका नमाज़ को छोड़ देना है, बयान फ़रमाया :

﴿مَا سَلَكَكُمْ فِي سَقَرَ ○ قَالُوا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّينَ﴾

तुम्हें नरक में किस चीज़ ने डाला, वे उत्तर देंगे कि हम नमाज़ी न थे। (अल-मुद्दस्सिर: ४२,४३)

और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिस ने दो ठंडे समय में नमाज़ पढ़ी अर्थात फ़ज्र और अस्र की, वह जन्नत (स्वर्ग) में प्रवेश करेगा जैसाकि सहीह हदीस में है :

((مَنْ صَلَّى الْبَرْدَيْنِ دَخَلَ الْجَنَّةَ))

"जिसने दो ठंडे समय में नमाज़ पढ़ी वह जन्नत में जायेगा।"

नमाज़ धर्म का एक ऐसा चिन्ह है जो सभी रसूलों के धर्मों में सामान्य रही है और सम्पूर्ण अम्बिया को इसके स्थापित का आदेश दिया गया था। यह अकेला अल्लाह जिसका कोई साझी नहीं, उसके लिए स्वयं को समर्पण कर देने और उसकी आज्ञा पालन की प्रतिनिधि करती है और दिलों में तक़्वा (संयम), अल्लाह की ओर झुकना, धैर्य, अल्लाह (तआला) का डर, अल्लाह के मार्ग में युद्ध और अल्लाह पर विश्वास का प्रशिक्षण देती है।

यह एक ऐसा स्पष्ट चिन्ह है जो अल्लाह पर ईमान (विश्वास) और अखिल जगत के प्रभु के प्रति सच्चाई को प्रकट करती है।

इसलिए प्रत्येक मुसलमान के लिए अनिवार्य है कि वह नमाज़ों को उनके समय पर पढ़ने और स्थापित करने का प्रयोजन करे, और जिस प्रकार अल्लाह ने उसे निर्धारित किया है उसी प्रकार उसे स्थापित करे, ताकि अल्लाह और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की आज्ञा पालन और अनुकरण से सौभाग्य प्राप्त करे और अल्लाह के क्रोध एवं उसके प्रकोप से सुरक्षित रहे।

तहारत (पवित्रता का बयान)

पवित्रता एवं सफाई तीन वस्तुओं को सम्मिलित है।

१- शरीर (बदन) का पवित्र (पाक) होना।

२- वस्त्र (कपड़े) का पवित्र (पाक) होना।

३- जिस स्थान में नमाज़ पढ़ी जाये उसका पवित्र (पाक) होना।

शरीर की पवित्रता (पाकी) दो प्रकार में से एक के द्वारा होनी चाहिए :

प्रथम स्नान द्वारा :

बड़ी नापाकी जो जनाबत (पत्नी से संभोग अथवा इहतिलाम के कारण) या मासिक धर्म या परसौति के कारण होती है उसमें ग़ुस्ल (स्नान) अनिवार्य है, उसकी विधि यह है कि पवित्रता की नियत से अपने पूरे शरीर पर और बालों पर पानी बहाये।

द्वितीय वज़ू द्वारा :

अल्लाह तआला फ़रमाते हैं :

﴿يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قُمْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ
فَاغْسِلُوا وُجُوهَكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ إِلَى الْمَرَافِقِ

وَامْسَحُوا بِرُءُوسِكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ إِلَى الْكَعْبَيْنِ﴾

"हे ईमान वालो ! जब तुम नमाज़ के लिए उठो तो अपने मुंह तथा कोहनियों सहित अपने हाथों को धो लिया करो और अपने सिर का मसह कर लो, तथा अपने पैर टखनों सहित धुल लो।" (अल-मायद:-६)

यह आयत करीमा वज़ू के समय निम्नलिखित बातों का आदेश देती है, जिसका पालन करना अनिवार्य (ज़रूरी) है :

१- चेहरा का धोना, इसी के अन्तर्गत कुल्ली करना और नाक में पानी चढ़ाना है।

२- दोनों हाथों को कुहनियों के साथ धोना।

३- पूरे सिर का मसह करना, दोनों कान भी इसी के अन्तर्गत हैं।

४- दोनों पांव को टखनों के साथ धोना।

कपड़े और स्थान की पवित्रता उस समय होगी जबकि उनको नापाक वस्तुओं जैसे पेशाब, पाख़ाना आदि से साफ़ कर दिया जाये।

तयम्मुम

पवित्रता के सम्बन्ध में अल्लाह तआला की मुसलमानों पर बहुत बड़ी कृपा है कि उसने उन लोगों के लिए जिनके पास जल (पानी) न हो अथवा उसका प्रयोग हानिकारक हो ऐसी अवस्था में पवित्र मिट्टी से तयम्मुम (पवित्रता) करने की आज्ञा दी है, वह इस प्रकार कि अपनी हथेलियों को धरती पर मारे फिर उनको अपने चेहरे पर फेरे और हाथों पर मले, अल्लाह तआला फ़रमाते है :

﴿فَلَمْ تَجِدُوا مَاءً فَتَيَمَّمُوا صَعِيدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوا بِوُجُوهِكُمْ وَأَيْدِيكُمْ مِنْهُ﴾

"और जल (पानी) न मिले तो पवित्र मिट्टी से तयम्मुम कर लो, उसे अपने चेहरे तथा हाथों पर मलो।
(अल-मायदः-६)

अम्मार रज़ि अल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे किसी काम से बाहर भेजा, वहाँ मैं नापाक हो गया, और जल (पानी) न पा सका, तो मैं धरती पर ऐसे लोट गया जैसे पशु लोटते हैं, फिर मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और आप से

उसका वर्णन किया, तो आप ने फ़रमाया कि :

((إِنَّمَا يَكْفِيكَ أَنْ تَقُولَ بِيَدَيكَ هَكَذَا))

"तुम्हारे लिए पर्याप्त था कि तुम अपने हाथों से इस प्रकार कर लेते।"

फिर आपने अपने हाथों को एक बार धरती पर मारा, बायें को दायें पर मला और अपनी हथेलियों के ऊपरी भाग और चेहरे पर मसह किया। (बुख़ारी एवं मुस्लिम)

फ़र्ज़ (अनिवार्य) नमाज़ें

इस्लाम ने प्रत्येक मुस्लिम (पुरूष एवं स्त्री) पर दिन और रात में पाँच नमाज़ें अनिवार्य की हैं, वह यह हैं :

१- भोर (फ़ज्र) की नमाज़

२- ज़ुहर की नमाज़

३- अस्र की नमाज़

४- मग़रिब की नमाज़ (सूर्यास्त के समय)

५- इशा की नमाज़

१- भोर (फ़ज्र) की नमाज़ :

दो रकअत है, और उसका समय दूसरे फ़ज्र के उदय अर्थात रात्रि के अंतिम भाग में पूरब की ओर जो प्रकाश फैल जाता है (भोर) से लेकर सूर्य उदय तक रहता है।

२- ज़ुहर की नमाज़ :

चार रकअत है, उसका समय दोपहर को आकाश के बीच से सूर्य के ढलने से आरम्भ होता है और उस समय तक रहता है जब तक कि सूर्य ढलते समय वाली छाया के अतिरिक्त प्रत्येक वस्तु की छाया उसके समान न हो जाये।

३- अस्र की नमाज़ :

चार रकअत है, उसका समय ज़ुहर के समय के समाप्त हो जाने के पश्चात आरम्भ होता है और उस समय तक रहता है जब तक कि सूर्य ढलने के पश्चात वाली छाया के अतिरिक्त प्रत्येक वस्तु की छाया उसकी दो गुणा न हो जाये, परन्तु इस नमाज़ का आवश्यकतानुसार समय सूर्यास्त तक रहता है।

४- मग़रिब की नमाज़ :

तीन रकअत है, उसका समय सूर्यास्त से लेकर आकाश से लाली के समाप्त हो जाने तक है।

५- इशा की नमाज़ :

चार रकअत है, उसका समय मग़रिब के समय के समाप्त हो जाने के बाद आरम्भ होता है और तिहाई अथवा आधी रात्रि तक रहता है।

नमाज़ का तरीक़ा (विधि)

उपरोक्त तरीक़े से शरीर और स्थान की पवित्रता प्राप्त कर लेने के बाद और इस बात की पुष्टि कर लेने के बाद कि नमाज़ का समय हो चुका है, नमाज़ अदा करने वाला क़िबला की ओर मुँह करे, [क़िबला अल्लाह का घर है जिसको काअब: कहते हैं और जो मक्का शरीफ़ में है] जो अनिवार्य (फ़र्ज़) अथवा नफ़िल (इच्छुक) नमाज़ पढ़ना चाहता है उसकी दिल में नियत करे फिर निम्नलिखित कार्य करे।

१- अल्लाहु अकबर कहते हुए तकबीर कहे और अपनी दृष्टि को सजद: के स्थान पर रखे।

२- अल्लाहु अकबर कहते समय अपने दोनों हाथों को अपने कंधे के बराबर या कानों के लौ के बराबर उठाये।

३- तकबीर तहरीमा (नमाज़ आरम्भ करते समय अल्लाहु अकबर कहना) के बाद दुआये इस्तिफ़ताह पढ़नी सुन्नत है, इस्तिफ़ताह की दुआ यह है :

"سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ
وَتَعَالَى جَدُّكَ وَلاَ إِلَهَ غَيْرُكَ"

((सुब्हानका अल्लाहुम्मा व बिहम्दिका व तबारक-स्मोका व तआला जद्दोका व ला इलाहा ग़ैरुका))

"तू पवित्र है ऐ अल्लाह ! हम तेरी प्रशंसा करते हैं, तेरा नाम बरकत वाला है, तेरी महिमा उच्च है, तेरे सिवा कोई (सच्चा) पूज्य नहीं ।"

यदि चाहे तो इसके बदले यह दुआ पढ़े :

"اللَّهُمَّ بَاعِدْ بَيْنِي وَبَيْنَ خَطَايَايَ كَمَا بَاعَدتَّ بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ ، اللَّهُمَّ نَقِّنِي مِنْ خَطَايَايَ كَمَا يُنَقَّى الثَّوْبُ الأَبْيَضُ مِنَ الدَّنَسِ ، اللَّهُمَّ اغْسِلْنِي مِن خَطَايَايَ بِالْمَاءِ والثَّلْجِ وَالْبَرَدِ"

((अल्लाहुम्मा बाइद बैनी व बैना ख़तायाया कमा बाअत्ता बैना अलमशरिक वलमग़रिब, अल्लाहुम्मा नक़्क़ेनी मिन ख़तायाया कमा योनक़्क़ा अस्सौबो अलअबयज़ो मिनद्दनस् अल्लाहुम्मग सिलनी मिन ख़तायाया बिलमाए वस्सल्जे वल्बरदे))

"हे अल्लाह ! मेरे और मेरे पापों के मध्य दूरी कर दे, जैसे तूने पूरब और पश्चिम के बीच दूरी कर दी है। हे अल्लाह ! मुझे पापों से ऐसे साफ़ सुथरा कर दे

जिस प्रकार सफेद कपड़ा मैल कुचैल से साफ़ किया जाता है। हे अल्लाह ! मुझे मेरे पापों से जल, बर्फ और ओले द्वारा धुल दे।

४- उसके बाद कहे :

"أَعُوذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ، بِسْمِ الله الرحمنِ الرَّحِيمِ" :

((अऊज़ो बिल्लाहि मिनश्-शैतानिर्रजीम, बिस्मिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम))

फिर सूरह फ़ातिहा पढ़े जो निम्नलिखित है :

﴿الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ۝الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ۝ مَالِكِ يَوْمِ الدِّينِ۝إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ۝اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ۝صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلاَ الضَّالِّينَ﴾

"सब प्रशंसा अल्लाह सर्वलोक के पालनहार के लिए है। बड़ा दयावान अति करूणामयी है। बदले (क़ियामत) के दिन का स्वामी है। हम तेरी ही इबादत (उपासना) करते तथा तुझ ही से सहायता मांगते हैं।

हमें सीधा (सत्य) मार्ग दिखा। उन लोगों का मार्ग जिन पर तूने उपकार किया, उनका नहीं जिन पर प्रकोप हुआ तथा न गुमराहों का।"

सूरह फ़ातिहा के ख़त्म (समाप्त) होने के बाद 'आमीन' कहे।

५- फिर उसको जो कुछ क़ुरआन याद हो वह पढ़े, जैसे :

﴿إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ ○ وَرَأَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُونَ فِي دِينِ اللَّهِ أَفْوَاجًا ○ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ إِنَّهُ كَانَ تَوَّابًا﴾

"जब अल्लाह की सहायता एवं विजय प्राप्त हो जाये और तुम लोगों को अल्लाह के धर्म की ओर झुंड के झुंड आते देख लो, तो तुम अपने प्रभु की महिमा एवं प्रशंसा करने में लग जाओ, और उससे क्षमा की प्रार्थना करो, निःसन्देह वह क्षमा करने वाला है।

या इसके अतिरिक्त दूसरी सूरह।

६- फिर उसके बाद "अल्लाहु अकबर" कहते हुए रुकूअ में जाये, रुकूअ में अपनी पीठ को समतल रखे, अपने हाथों को अपने घुटनों पर रखे और यह दुआ पढ़े :

"سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيم"

((सुब्हान रब्बीअल अज़ीम)) "पवित्र है मेरा महान प्रभु"

इस दुआ को तीन बार अथवा तीन से अधिक बार पढ़ना सुन्नत है।

७- फिर "समि अल्लाहु लिमन हमिद:" कहते हुए चाहे इमाम हो या अकेला अपना सिर रुकूअ से उठाये, और भली प्रकार सीधा खड़े हो जाने के बाद यह दुआ पढ़े :

"رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ حَمْداً كَثِيرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيهِ مِلْءَ السَّمَوَاتِ وَمِلْءَ الأَرْضِ ، وَمِلْءَ مَا بَيْنَهُمَا وَمِلْءَ مَاشِئْتَ مِنْ شَيْءٍ بَعْدُ"

((रब्बना व लकल-हम्दो हम्दन कसीरन तय्येबन मुबारकन फ़ीहे मिलअस-समावाते व मिलअल अरज़े, व मिलआ मा बैनहुमा व मिलआ मा शेता मिन शैइन बादो))

"ऐ हमारे प्रभु ! तेरे ही लिए सम्पूर्ण प्रशंसा है, अत्याधिक पवित्र प्रशंसा, उसमें बरकत दी गयी है, धरती, आकाशों, उनके बीच और उनके पश्चात जो कुछ चाहे उन सब से भर कर।"

परन्तु यदि मुक्तदी (इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ने वाला) हो तो रुकूअ से सिर उठाते समय वह उपरोक्त दुआ "رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ" अन्त तक पढ़े।

८- फिर अल्लाहु अकबर कहते हुए सजदः में जाये और सजदः की स्थिति में अपने बाज़ूओं (भुजाओं) को अपने पहलू से और दोनों जाँघों को पिन्डली से अलग रखे, स्पष्ट रहे कि सजदः सात अंगों पर होना चाहिए, -नाक के साथ माथा (ललाट) पर -दोनों हथेलियों पर -दोनों घुटनों -दोनों पैर की अंगुलियों के भीतरी भाग (पंजों) पर - और सजदः में तीन या तीन से अधिक बार यह पढ़े :

"سُبْحَانَ رَبِّيَ الأَعْلَى"

((सुब्हान रब्बीअल-आला)) "पवित्र है मेरा उच्चय प्रभु"

इस दुआ के अतिरिक्त भी जो दुआ चाहे अधिक से अधिक पढ़े।

९- फिर "अल्लाहु अकबर" कहते हुए अपना सिर उठाये और दाहिने पैर को खड़ा करके अपने बायें पैर पर बैठ जाये, अपने दोनों हाथों को अपने दोनों जाँघों और घुटनों पर रखे और यह दुआ पढ़े :

"رَبِّ اغْفِرْلِي وَارْحَمْنِي وَعَافِنِي وَارْزُقْنِي وَاهْدِنِي وَاجْبُرْنِي"

((रब्बिग फ़िरली वरहमनी व आफ़िनी वरज़ुक़नी वहदिनी वजबुरनी))

"ऐ मेरे प्रभु ! मुझे क्षमा कर दे, मेरे ऊपर दया कर, मुझे माफ़ कर दे, मुझे जीविका दे, मुझे संमार्ग दे, मेरे घाटे को पूरा कर दे |"

१०- फिर "अल्लाहु अकबर" कहते हुए दूसरा सजद: करे और जिस प्रकार पहले सजद: में किया था उसी प्रकार करे, इसके साथ ही उसकी पहली रकअत पूरी हो गई |

११- फिर दूसरी रकअत के लिए "अल्लाहु अकबर" कहते हुए खड़ा हो जाये |

१२- फिर सूरह फ़ातिहा और कुछ क़ुरआन पढ़कर रुकूअ में जाये, रुकूअ से (सिर) उठाये, उसके पश्चात दो सजद: करे और वैसा करे जैसा कि पूर्ण रूप से पहली रकअत में किया था |

१३- दूसरे सजद: से उठने के बाद उसी प्रकार बैठ जाये जिस प्रकार दोनो सजद: के बीच बैठा था और तश्हहूद की दुआ पढ़े जो यह है :

"التَّحِيَّاتُ لِلَّهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ ، السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَاالنَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ ، السَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللهِ الصَّالِحِينَ ، أَشْهَدُ أَن لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّداً عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ"

((अत्तहियातो लिल्लाहि वस्सलवातु वत्तय्यिबातु अस्सलामु अलैका अय्योहन-नबियो व रहमतुल्लाहि व बरकातोहु, अस्सलामु अलैना व अला इबादिल-लाहिस्सालिहीन, अश्हदु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्ना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुह))

"सारी प्रशंसायें, नमाज़ें और पवित्र वस्तुयें अल्लाह के लिए हैं, हे नबी ! आप पर सलाम हो, और अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें अवतरित हों, सलाम हो हम पर और अल्लाह के नेक बन्दों पर, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूजने के योग्य नहीं है, और गवाही देता हूँ कि निःसंदेह मुहम्मद उसके बन्दे और उसके रसूल हैं।"

फिर यदि नमाज़ दो रकअत वाली है जैसे फ़ज्र की नमाज़, जुमुआ की नमाज़ और ईद की नमाज़, तो इस स्थिति में

अपनी जगह बैठा रहे और "अत्तिहियात" पूरी पढ़ने के पश्चात दरूद शरीफ पढ़े :

"اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَّجِيدٌ ، وَبَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَّجِيدٌ"

((अल्लाहुम्मा सल्ले अला मुहम्मद व अला आले मुहम्मद कमा सल्लैता अला इब्राहीम व अला आले इब्राहीम इन्नका हमीदुम मजीद, व बारिक अला मुहम्मद व अला आले मुहम्मद कमा बारक्ता अला इब्राहीम व अला आले इब्राहीम इन्नका हमीदुम मजीद))

"हे अल्लाह ! रहमत अवतरित कर मुहम्मद पर और मुहम्मद के परिवार पर जिस प्रकार तूने इब्राहीम और उसके परिवार पर रहमत अवतरित किया, नि:सन्देह तू प्रशंसा योग्य और महान है, और मुहम्मद एवं उसके परिवार पर बरकत अवतरित कर

जिस प्रकार तूने इब्राहीम और उसके परिवार पर बरकत अवतरित किया, नि:सन्देह तू प्रशंसा योग्य एवं महान है।"

इस स्थिति में चार वस्तुओं से अल्लाह की शरण माँगे और यह दुआ पढ़े :

"اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُبِكَ مِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ ، وَمِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ ، وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ ، وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيحِ الدَّجَّالِ"

((अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ोबिका मिन अज़ाबे जहन्नमा व मिन अज़ाबिल क़ब्र, व मिन फ़ित्नतिल महया वल ममाते व मिन फ़ित्नतिल मसीह अद्दज्जाल))

"हे अल्लाह मैं तेरी शरण चाहता हूँ, नरक के दण्ड से और क़ब्र के अज़ाब से, जीवन और मृत्यु के फ़ितने से, और मसीह दज्जाल के फ़ितने से।"

फिर चाहे फ़र्ज़ (अनिवार्य) नमाज़ हो अथवा नफ़िल (इच्छुक) संसार और परलोक की भलाई से सम्बन्धित जो भी दुआ हो माँगे।

फिर "अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह" कहते हुए दाहिने

ओर सलाम फेरे और फिर "अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह" कहते हुए बायें ओर सलाम फेरे।

यदि नमाज़ तीन रकअत वाली हो जैसे मग़रिब की नमाज़, या चार रकअत वाली हो, जैसे ज़ुहर, अस्र और इशा की नमाज़ें तो प्रथम तश्हहुद के बाद "अल्लाहु अकबर" कहते हुए खड़ा हो जाये। फिर केवल सूरह फ़ातिहा पढ़े और उसी प्रकार रुकूअ एवं सजद: करे जिस प्रकार प्रथम दो रकअत में किया था, फिर इसी प्रकार चौथी रकअत के लिए करे, और सजद: समाप्त कर लेने के बाद "तवर्रुक" करते हुए बैठ जाये अर्थात सीधा (दाहिना) पैर खड़ा रखकर उल्टे (बायें) पैर को उसके नीचे से निकाल ले और नितम्ब (सुरीन) को धरती पर रखकर बैठ जाये और मग़रिब की नमाज़ में तीसरी रकअत और ज़ुहर, अस्र और इशा में चौथी रकअत के पश्चात अंतिम तश्हहुद करे, उसमें तश्हहुद की दुआ पढ़े, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद भेजे और यदि चाहे तो दुआ करे, फिर दायें और बायें ओर सलाम फेरे; जैसाकि वर्णन हुआ, इस प्रकार उसकी नमाज़ पूरी हो गई।

जमाअत के साथ नमाज़

जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ना अकेले नमाज़ पढ़ने से सत्ताईस गुणा श्रेष्ठ है जैसाकि सहीह बुख़ारी में हदीस है जिसको अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु अन्हुमा ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत किया है।

और एक अन्य हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बयान फ़रमाया :

((لَقَدْ هَمَمْتُ أَنْ آمُرَ بِالصَّلاَةِ فَتُقَامَ ثُمَّ أُخَالِفَ إِلَى قَوْمٍ فِي مَنَازِلِهِمْ لاَ يَشْهَدُونَ الصَّلاَةَ فِي جَمَاعَةٍ فَأُحَرِّقُهَا عَلَيْهِمْ))

"मैंने संकल्प किया है कि जमाअत खड़ी करने का आदेश दे दूँ फिर उन लोगों के पास जाऊँ जो अपने घरों में रह जाते हैं और नमाज़ (जमाअत) में उपस्थित नहीं होते और उनके घरों को जला दूँ।" (बुख़ारी एवं मुस्लिम)

इसलिए यदि जमाअत से नमाज़ पढ़ने को छोड़ देना महापाप न होता तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके

घरों को जला देने की धमकी न देते।

अल्लाह तआला बयान फ़रमाते हैं :

﴿وَأَقِيمُوا الصَّلاَةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَارْكَعُوا مَعَ الرَّاكِعِينَ﴾

"और नमाज़ स्थापित करो, एवं ज़कात दो और रुकूअ करने वालों के साथ रुकूअ करो (झुक जाओ)।" (अल-बक़र:-४३)

इस आयत करीमा से ज्ञात हुआ कि मुसलमानों के साथ जमाअत से नमाज़ पढ़ना अनिवार्य है।

जुमुआ की नमाज़

इस्लाम धर्म संग्रहता एवं एकत्रता को पसन्द करता है और उसकी ओर आमन्त्रण देता है। इसके विपरीत वह गुटबन्दी और अलग-अलग रहने को अप्रिय जानता है और उससे घृणा करता है।

मुसलमानों के बीच परिचय कराने, एकत्र होने, प्रेम व्यवहार करने के लिए उसने कोई अवसर नहीं छोड़ा, बल्कि उसकी ओर बुलाया और आदेश दिया है।

जुमुआ का दिन मुसलमानों के लिए ईद (पर्व) का दिन है, उस दिन अल्लाह की याद और उसकी प्रशंसा के लिए चलकर आते हैं, और अल्लाह के घरों (मस्जिदों) में संसार के सारे झमेलों को छोड़कर एकत्र होते हैं ताकि अल्लाह के लिए एक अनिवार्य नमाज़ पढ़ सकें और जुमुआ के ख़ुत्बे में जो कि साप्ताहिक पाठ है विद्वानों की नसीहतों और ख़तीबों के उपदेशों को सुन सकें।

इस ख़ुत्बे में ख़तीब (भाषण देने वाला) अल्लाह की तौहीद (अद्वैत) को श्रोताओं के दिलों में बिठाता है, उनके दिलों में अल्लाह और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के

प्रेम को उभारता है, उनकी आज्ञा पालन का उपदेश देता है और उनके हृदयों को ख़ुत्बा के द्वारा गरमाता है, अल्लाह तआला फ़रमाते हैं :

﴿يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نُودِي لِلصَّلَاةِ مِنْ يَوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا إِلَى ذِكْرِ اللَّهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنتُمْ تَعْلَمُونَO فَإِذَا قُضِيَتِ الصَّلَاةُ فَانتَشِرُوا فِي الأَرْضِ وَابْتَغُوا مِنْ فَضْلِ اللَّهِ وَاذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ﴾

"हे ईमान वालो ! जुमुआ के दिन (शुक्रवार को) नमाज़ की अज़ान दी जाये तो तुम अल्लाह की याद की ओर शीघ्र आ जाया करो तथा क्रय-विक्रय छोड़ दो, यह तुम्हारे पक्ष को अति उत्तम है यदि तुम जानते हो। फिर जब नमाज़ हो जाये तो धरती पर फैल जाओ तथा अल्लाह की कृपा को खोजो, तथा अल्लाह का अत्याधिक वर्णन करो ताकि तुम सफ़लता प्राप्त कर सको। (अल-जुमुआ:९,१०)

जुमुआ की नमाज़ प्रत्येक उस मुसलमान पुरूष पर अनिवार्य है जो प्रौढ़ (बालिग़) हो, आज़ाद हो और यात्रा में न हो, नबी

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस नमाज़ को हमेशा पढ़ा और उसके छोड़ने वालों पर सख़्ती की।

आप ने फ़रमाया :

((لَيَنْتَهِيَنَّ أَقْوَامٌ عَنْ وَدَعِهِمُ الْجُمُعَاتِ أَوْ لَيَخْتِمَنَّ اللهُ عَلَى قُلُوبِهِمْ ثُمَّ لَيَكُونَنَّ مِنَ الْغَافِلِينَ))

"लोग जुमुआ की नमाज़ छोड़ने से रुक जायें वरना अल्लाह उनके हृदय (दिलों) पर मुहर लगा देगा फिर वे अचेत रहने वालों में हो जायेंगे।" (मुस्लिम)

और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

((مَنْ تَرَكَ ثَلاَثَ جُمَعٍ تَهَاوُنًا طَبَعَ اللهُ عَلَى قَلْبِهِ))

"जो व्यक्ति तीन जुमुआ सुस्ती के कारण छोड़ दे अल्लाह (तआला) उसके हृदय पर मुहर लगा देगा।

जुमुआ की नमाज़ दो रकअत है, जिसको एक मुसलमान मुसलमानों की जमाअत के साथ इमाम का अनुसरण करते हुए पढ़ता है।

जुमुआ की नमाज़ जमाअत के बिना सहीह नहीं है, इसमें सभी मुसलमान एकत्र होते हैं, उनका इमाम उनको ख़ुत्बा देता है, उन्हें नसीहत करता है और उन्हें सहीह मार्ग दिखाता है।

ख़ुत्बा के मध्य बातचीत करना हराम (अवैध) है, यहाँ तक कि यदि आप ने अपने साथी से कहा कि "चुप रहो" तो आपने ग़लत किया।

यात्री की नमाज़

अल्लाह (तआला) ने बयान फ़रमाया :

﴿يُرِيدُ اللهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ الْعُسْرَ﴾

"अल्लाह (तआला) तुम्हारे साथ सरलता चाहता है कठोरता की इच्छा नहीं रखता। (अल-बक़र:-१८५)

चूँकि इस्लाम सरलता और आसानी का धर्म है इसलिए अल्लाह (तआला) किसी आत्मा पर उसके सामर्थ्य से अधिक बोझ नहीं डालता, और उसे ऐसा आदेश नहीं देता जिसके पालन की वह क्षमता न रखता हो, चूँकि यात्रा में कष्ट और परेशानी की संभावना अधिक होती है इसलिए अल्लाह (तआला) ने इसमें दो चीज़ों की छूट दी है।

प्रथम : नमाज़ क़स्र करना –

क़स्र का अर्थ यह है कि चार रकअत वाली नमाज़ दो रकअत पढ़ी जाये, इसलिए यदि तुम यात्रा में हो तो ज़ुहर, अस्र और इशा की नमाज़ें चार रकअत की बजाय दो रकअत

पढ़ो, हाँ मग़रिब और फ़ज्र की नमाज़ें अपनी स्थिति पर रहेंगी उनमें क़स्र नहीं है।

नमाज़ का क़स्र करना यह अल्लाह (तआला) की ओर से अपने बन्दों (दासों) के लिए एक छूट और आसानी है और अल्लाह (तआला) इस बात को पसन्द करता है कि जिस प्रकार उसके आदेश का पालन किया जाये उसी प्रकार उसकी ओर से छूट को भी स्वीकार किया जाये।

यात्रा के सम्बन्ध में मोटर से, रेल से, वायुयान से, जहाज़ से, चौपायों द्वारा और पैदल यात्रा करने के मध्य कोई अंतर नहीं, बल्कि जिस यात्रा को भी यात्रा कहा जाये उसमें नमाज़ क़स्र की जा सकती है जब तक कि वह पाप की यात्रा न हो।

द्वितीय : दो नमाज़ों को इकट्ठा करना –

यात्री के लिए अनुमति है कि वह एक ही समय पर दो नमाज़ों को एक साथ इकट्ठा करके पढ़ ले, इस आधार पर वह ज़ुहर और अस्र के मध्य, इसी प्रकार मग़रिब और इशा के मध्य नमाज़ को इकट्ठा करेगा और दोनों नमाज़ों का समय एक होगा जिसमें दोनों नमाज़ें एक-दूसरे से अलग-अलग पढ़ी जायेंगी, अर्थात पहले ज़ुहर की नमाज़ पढ़ेगा फिर उसके तुरन्त पश्चात अस्र की नमाज़ पढ़ेगा,

अथवा मग़रिब की नमाज़ पढ़ेगा और फिर उसके पश्चात इशा की नमाज पढ़ेगा।

यह स्पष्ट रहे कि दो नमाज़ें केवल ज़ुहर और अस्र के बीच इसी प्रकार मग़रिब और इशा के बीच इकठ्ठी करेंगे, इसलिए अन्य समय जैसे फज्र और ज़ुहर के बीच या अस्र और मग़रिब के बीच दो नमाज़ों को इकठ्ठा करना वैध (जायज़) नहीं।

मसनून दुआयें

नमाज़ी के लिए मसनून तरीक़ा यह है कि वह नमाज़ से सलाम फेरने के बाद तीन बार "अस्तग़फिरुल्लाह" ((أَسْتَغْفِرُ اللهَ)) कहे और यह दुआ पढ़े :

"اللَّهُمَّ أَنْتَ السَّلاَمُ و مِنكَ السَّلاَمُ ،تَبَارَكْتَ يَا ذَا الجَلاَلِ وَ الإِكرَامِ،لاَ إِلَهَ إلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَه، لَهُ المُلْكُ وَلَهُ الحَمْدُ وَ هُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، اللَّهُمَّ لاَ مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ وَلاَ مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ وَلا يَنْفَعُ ذَا الجَدِّ مِنْكَ الجَدُّ"

((अल्लाहुम्मा अन्तस्सलाम व मिनकस्सलाम तबारकता या ज़ल जलालि वल इकराम, ला इलाहा इल्लल्लाह वहदहु ला शरीका लहु लहुल-मुल्को व लहुल-हम्दो व हुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर, अल्लाहुम्मा लामानेअ लिमा आतैता वला मोअतिया लिमा मनअता वला यनफ़उ ज़ल्जद्दि मिन्कल जद्द।))

"हे अल्लाह ! तू सलामती वाला है, और तुझ से

सलामती है, ऐ महानता एवं इज़्ज़त वाले तू बरकत वाला है, अल्लाह के अतिरिक्त कोई भी पूजने के योग्य नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं, उसी के लिए राज्य और उसी के लिए सब प्रशंसा है, वह प्रत्येक चीज़ पर सामर्थ्य रखता है, हे अल्लाह ! जो कुछ तू दे उसको कोई रोकने वाला नहीं, और जो तू रोक दे उसको कोई देने वाला नहीं, और धनी को उस का धन तेरे प्रकोप से कोई लाभ (फ़ायदा) न देगा। (बुख़ारी एवं मुस्लिम)

फिर (३३) तैंतीस बार "सुब्हानल्लाह" (३३) तैंतीस बार "अल्हम्दु लिल्लाह" और (३३) तैंतीस बार "अल्लाहु अकबर" कहे और सौ की गिनती इस दुआ से पूरी करे।

"لاَ إِلَهَ إِلا اللهُ وَحْدَه لاَ شَرِيكَ لَهُ ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ"

"अल्लाह के अतिरिक्त कोई भी पूजने के योग्य नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं, उसी के लिए राज्य और उसी के लिए सब प्रशंसा है, वह प्रत्येक चीज़ पर सामर्थ्य रखता है।"

उसके बाद आयतुल कुर्सी, सूरह अल-इख़लास, सूरह

अल-फ़लक़ और सूरह अन-नास पढ़े।

फ़ज्र और मग़रिब की नमाज़ों के पश्चात उपरोक्त सूरतों को तीन-तीन बार पढ़ना उत्तम है, इसी प्रकार मग़रिब एवं फ़ज्र की नमाज़ों के बाद उपरोक्त दुआओं को पढ़ने के पश्चात दस बार इस दुआ का पढ़ना मुस्तहब (उत्तम) है।

"لاَ إِلَهَ إِلا اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ، يُحْيِي وَ يُمِيتُ وَ هُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ"

"अल्लाह के अतिरिक्त कोई भी पूजने के योग्य नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं, उसी के लिए राज्य और उसी के लिए सब प्रशंसा है, वह जीवन और मृत्यु देता है, और वह प्रत्येक चीज़ पर सामर्थ्य रखता है।"

स्पष्ट रहे कि इन सभी दुआओं का पढ़ना सुन्नत है फ़र्ज़ (अनिवार्य) नहीं।

सुन्नते मुअक्कदह

प्रत्येक मुस्लिम पुरूष एवं स्त्री के लिए उत्तम है कि वह यात्रा में न होने की स्थिति में बारह रकअत सुन्नतों की अवश्य सुरक्षा करे।

ज़ुहर की नमाज़ से पूर्व चार रकअत और दो रकअत नमाज़ के बाद, मग़रिब के बाद दो रकअत, इशा के बाद दो रकअत और फ़ज्र की नमाज़ से पूर्व दो रकअत।

उम्मुल मोमिनीन उम्मे हबीबा -रमला बिन्ते अबी सुफ़ियान रज़ी अल्लाहु अन्हुमा कहती हैं कि मैंने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़रमाते हुए सुना :

((مَا مِنْ عَبْدٍ مُسْلِمٍ يُصَلِّي للهِ فِي كُلِّ يَوْمٍ ثِنْتَيْ عَشْرَةَ رَكْعَةً تَطَوُّعاً غَيْرَ الْفَرِيضَةِ إِلاَّ بَنَى اللهُ لَهُ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ ، أَوْ بُنِيَ لَهُ بَيْتٌ فِي الْجَنَّةِ))

"जो मुसलमान बन्दा अल्लाह के लिए प्रतिदिन अनिवार्य के अतिरिक्त बारह रकअत नफ़िल (इच्छुक) नमाज़ पढ़ता है अल्लाह उसके लिए जन्नत (स्वर्ग) में घर बनाता है, या जन्नत में उसके लिए घर बनाया जाता है। (मुस्लिम)

परन्तु यात्रा में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ज़ुहर, मग़रिब और इशा की सुन्नतें छोड़ देते थे और केवल फ़ज्र की सुन्नतें एवं वित्र की नमाज़ों का ख़्याल रखते थे।

और हमारे लिए अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के जीवन में उत्तम आदर्श है जैसाकि अल्लाह (तआला) ने बयान फ़रमाया :

﴿لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ﴾

"तुम्हारे लिए अवश्य अल्लाह के रसूल में उत्तम आदर्श है।" (अल-अहज़ाब: २१)

और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

"صَلُّوا كَمَا رَأَيْتُمُونِي أُصَلِّي"

"तुम उसी प्रकार नमाज़ पढ़ो जिस प्रकार मुझे नमाज़ पढ़ते हुए देखते हो।" (बुख़ारी एवं मुस्लिम)

وَاللهُ وَلِيُّ التَّوْفِيقِ ، وَصَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَصَحْبِهِ وَسَلَّمَ۔

और अल्लाह ही तौफ़ीक देने वाला है और दरूद व सलाम मुहम्मद एवं उनके परिवार और साथियों पर हो।

विषय सूची

विषय	पृष्ठ संख्या
प्रस्तावना	३
परिभाषा	५
इस्लाम में नमाज़ का महत्व	१६
तहारत (पवित्रता एवं सफ़ाई)	२३
तयम्मुम (मिट्टी द्वारा पवित्रता)	२५
अनिवार्य (फ़र्ज़) नमाज़ें	२७
नमाज़ का तरीक़ा (विधि)	२९
जमाअत के साथ नमाज़	४०
जुमुआ की नमाज़	४२
यात्री की नमाज़	४६
मसनून दुआयें	४९
सुन्नतें मुअक्कदह	५२

تعليم الصلاة

إعداد
د. عبدالله بن أحمد بن علي الزيد

باللغة الهندية

أشرفت وكالة شؤون المطبوعات والنشر بالوزارة على إصداره
١٤٢٢هـ

توزيع

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات في حي سلطانة بالرياض
هاتف ٤٢٤٠٠٧٧ ناسوخ ٤٢٥١٠٠٥ ص.ب ٩٢٦٧٥ الرياض ١١٦٦٣
شارع السويدي العام – المملكة العربية السعودية

هندي - ١٥٩

تعليم الصلاة

إعداد

د/ عبدالله بن أحمد بن علي الزيد

نقله إلى اللغة الهندية

محمد طاهر حنيف

ردمك: ١-٣٩٧-٢٩-٩٩٦٠

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بسلطانة

تحت إشراف وزارة الشؤون الإسلامية والأوقاف والدعوة والإرشاد

هاتف: ٤٢٤٠٠٧٧ ناسوخ: ٤٢٥١٠٠٥ ص ب ٩٢٦٧٥ الرياض ١١٦٦٣ بريد إلكتروني E.mail : Sultanah22@hotmail.com